भाकृअनुप
ICAR

मृदा स्वास्थ्य के लिए
उर्वरको का संतुलित उपयोग

स्वस्थ मृदा • समृद्ध फसल • खुशहाल किसान

संतुलित उर्वरक उपयोग क्यों आवश्यक?

- मृदा की उर्वरता बनाए रखें
- फसल उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ाएँ
- उर्वरक लागत घटाएँ, लाभ बढ़ाएँ
- पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि को बढ़ावा दें

संतुलित पोषण = स्वस्थ मृदा

- **N** नाइट्रोजन — वृद्धि के लिए
- **P** फॉस्फोरस — जड़ विकास के लिए
- **K** पोटाश — गुणवत्ता और रोग प्रतिरोध के लिए
- \+ सूक्ष्म पोषक तत्व — जिंक, सल्फर, आयरन आदि की कमी पूरी करें

मृदा स्वास्थ्य के लिए अपनाएँ ये 7 महत्वपूर्ण उपाय

1 मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक उपयोग

- मृदा परीक्षण कराएँ
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार उर्वरक दें
- N, P, K का संतुलित अनुपात रखें
- सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी पहचानें और पूर्ति करें

लाभ: सही पोषण, अधिक उत्पादन, कम लागत

2 प्राकृतिक एवं जैविक स्रोतों का उपयोग

- गोबर खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग करें
- जैव उर्वरक (राईजोबियम, PSB, एजोटोबैक्टर) अपनाएँ
- मृदा में जैविक कार्बन बढ़ाएँ

लाभ: मृदा संरचना सुधरे, दीर्घकालीन उर्वरता बढ़े

3 दलहनी फसलें एवं हरी खाद

- चना, मूंग, उड़द जैसी दलहनी फसलें शामिल करें
- ढैंचा, सनेहत्में जैसी हरी खाद उगाएँ
- जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण बढ़ाएँ

लाभ: नाइट्रोजन की आवश्यकता घटे

4 खरपतवार प्रबंधन

- खरपतवार फसल के पोषक तत्वों, पानी और प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं
- समय पर निराई-गुड़ाई करें
- समेकित खरपतवार प्रबंधन अपनाएँ

लाभ: पोषक तत्व उपयोग दक्षता बढ़े

5 एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM)

- रासायनिक, जैविक और जैव उर्वरकों का समन्वित उपयोग करें
- फसल और मृदा की आवश्यकता अनुसार पोषण दें

लाभ: टिकाऊ उत्पादन, स्वस्थ मृदा, बेहतर लाभ

6 फसल अवशेष प्रबंधन

- फसल अवशेषों को न जलाएँ
- अवशेषों को खेत में मिलाएँ या कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करें
- जैविक कार्बन बढ़ाएँ, मृदा की गुणवत्ता सुधारें

लाभ: मृदा की जल धारण क्षमता बढ़े

7 संतुलित सिंचाई एवं उर्वरक प्रबंधन

- उर्वरकों का विभाजित प्रयोग करें
- फर्टिगेशन (सिंचाई के साथ उर्वरक) अपनाएँ
- पानी और पोषक तत्वों का इष्टतम उपयोग करें

लाभ: जल और उर्वरक की बचत, अधिक उत्पादन

संतुलित उर्वरक उपयोग के व्यापक लाभ

- उच्च फसल उत्पादन
- उर्वरक की लागत में कमी
- मृदा की उर्वरता और स्वास्थ्य में सुधार
- जल धारण क्षमता में वृद्धि
- पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि
- किसान की आय में वृद्धि

याद रखें

- सही स्रोत, सही मात्रा, सही समय, सही विधि से उर्वरकों का उपयोग करें।
- मृदा परीक्षण कराएं और संतुलित प्रयोग विधि अपनायें।
- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करें, आने वाली पीढ़ी को समृद्ध धरती दें।

संतुलित उर्वरक उपयोग अपनाएँ, मृदा को पोषण दें – फसल से भरपूर उत्पादन लें!

प्रस्तुतकर्ता: सुरभि होता, जीतेन्द्र कुमार सोनी एवं पी.के. सिंह

भा.कृ.अनु.प.- खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर (म.प्र.)